हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा समकालीन समाज शास्त्रीय मुद्दों पर व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन, अतिथि बोले-

सोशल मीडिया का हस्तक्षेप लोगों के जीवन पर डाल रहा नकारात्मक प्रभाव

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के समाज शास्त्र विभाग द्वारा प्रासंगिक समाजशास्त्रीय विषय पर 15 से 27 मार्च 2018 के बीच व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया जा रहा है। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक से समाज शास्त्र विभाग के पूर्व प्रो. बीके नागला ने जहां राजनीतिक समाजीकरण और राजनीतिक संस्कृति पर व्याख्यान दिया, वहीं उसी विश्वविद्यालय के एक अन्य पूर्व प्रो. डॉ. जितेन्द्र प्रसाद ने समकालीन समय में समाज शास्त्रीय सिद्धांत के महत्व और प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

दूसरे व्याख्यान में प्रो. जितेन्द्र प्रसाद ने समाज शास्त्र में प्रकार्य और संरचनात्मक दृष्टिकोण के महत्व पर केन्द्रित किया। उन्होंने इस सवाल को समझने की कोशिश की कि समाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए समाज के मूल्यों और उसके सामान्य नियम क्या है? उन्होंने कहा कि निजी जीवन में जिस तरह से तकनीकी वर्चस्व जैसे इंटरनेट, मोबाइल, फेसबुक, ट्यूटर और समाजिक मीडिया के अन्य माध्यम से हस्तक्षेप हो रहा है, उसके कारण लोगों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। तीसरी व्याख्यान श्रृंखला में जेण्डर के समाज शास्त्र

नारनौल. समाजशास्त्र विभाग में व्याख्यान देते विशेषज्ञ।

पर जेएनयू की शोध विद्यार्थी अर्चना पांडेय ने महिला और पुरुष के बीच असमानता, निर्भरता, अधीनता और पूरकता के सैद्धांतिकी पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए विभिन्न सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से जेण्डर और विकास विषय के बारे में छात्रों को बताया। आधुनिकता और परम्परा की अवधारणा, राज्य और राज्य निर्माण और भूमंडलीकरण आदि विषयों पर इस श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए दिल्ली विवि के समाज शास्त्रियों को आमंत्रित किया जा रहा है। वे भारत में गरीबी की राजनीति और सत्ता के मुद्दे पर भी व्याख्यान देंगे।

समाजशास्त्रीय मुद्दों पर व्याख्यान श्रृंखला का किया आयोजन

महेंद्रगढ़, 20 मार्च (परमजीत/मोहन): हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के समाजशास्त्र विभाग द्वारा प्रासंगिक समाजशात्रीय विषय पर 15 से 27 मार्च 2018 के बीच व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया जा रहा है। व्याख्यान के लिए प्रख्यात समाजशास्त्रियों और शोध विद्यार्थियों को विषय आधारित व्याख्यान के लिए हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़ ने आमंत्रित किया है। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से समाजशास्त्र विभाग के पूर्व प्रोफैसर बी.के. नागला ने जहां राजनीतिक सामाजीकरण और राजनीतिक संस्कृति पर व्याख्यान दिया, वहीं उसी विश्वविद्यालय के एक अन्य भूतपूर्व प्रोफैसर डा. जितेन्द्र प्रसाद ने समकालीन समय में समाजशास्त्रीय सिद्धांत के महत्व और प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

प्रो. नागला ने राजनीतिक आधुनिकीकरण और भूमंडलीकरण पर 2 व्याख्यान दिए। उन्होंने समाजशास्त्र के महत्व और राजनीतिक संस्कृति के बारे में बताते हुए राजनीतिक समाजीकरण के लिए राजनीतिक संस्कृति के प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत के महत्वपूर्णता को जाहिर किया।

हालांकि उन्होंने प्राथमिक श्रोत पर चिंता व्यक्त की कि आज के समय में परिवार, साथियों के समूह और स्कूल जिस तरह के भयानक तनाव और दबाव से गुजर रहे हैं। दूसरी तरफ द्वितीयक स्रोत के रूप में निजी जीवन में मीडिया, सरकार और राजनीतिक पार्टियों ने प्राथमिक स्रोतों पर वर्चस्व कायम कर लिया है। उन्होंने सुझाव दिया कि समाजशास्त्रियों को इस परिवर्तन के लिए जिम्मेदार कारक का अध्ययन करना चाहिए।

दूसरे व्याख्यानमाला में प्रो. जितेन्द्र प्रसाद ने अपने व्याख्यान में समाजशास्त्र में प्रकार्य और सरंचनात्मक दृष्टिकोण के महत्व पर केन्द्रित किया। उन्होंने इस सवाल को समझने की कोशिश की कि सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए समाज के मूल्यों और उसके सामान्य नियम क्या हैं। उन्होंने कहा कि निजी जीवन में जिस तरह से तकनीकी वर्चस्व जैसे इंटरनैट, मोबाइल, फेसबुक, ट्यूटर और सामाजिक मीडिया के अन्य माध्यम से हस्तक्षेप हो रहा है उसके कारण लोगों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। इसलिए समाजशास्त्र के विद्यार्थी होने के नाते समाज की विभिन्न

के.वि.वि. में समाज शास्त्र विभाग में व्याख्यान करते विशेषज्ञ। मोहन

प्रकृतियों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से व्यवस्थित रूप में अध्ययन करना चाहिए। तीसरी व्याख्यान श्रृंखला में जैंडर के समाजशास्त्र पर जे.एन.यू. की शोध विद्यार्थी अर्चना पांडेय ने बातचीत रखी। उन्होंने महिला और पुरुष के बीच असमानता, निर्भरता, अधीनता और पूरकता के सैद्धांतिकता पर प्रकाश डाला। इसके साथ ही उन्होंने भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए विभिन्न सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से जैंडर और विकास विषय के बारे में छात्रों को बताया।

आधुनिकता और परम्परा की अवधारणा, राज्य और राज्य निर्माण और भूमंडलीकरण आदि विषयों पर इस श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए दिगी विश्वविद्यालय के समाजशास्त्रियों को आमंत्रित किया जा रहा है। वह भारत में गरीबी की राजनीति और सत्ता के मुद्दे पर भी व्याख्यान देंगे।

हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा लगातार इस तरह अकादमिक गतिविधि करके छात्रों को विषय में पारंगत किया जा रहा है। समाजशास्त्र विभाग एम.ए., एम.फिल., और पी.एच.डी. में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित कर रहा है। छात्रों को प्रवेश पाने के लिए केंद्रीय विश्वविद्यालय संयुक्त प्रवेश परीक्षा (सीयूसीईटी)-2018 होगी। छात्र समाजशास्त्र विभाग में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। आवेदन की अंतिम तिथि 26 मार्च 2018 तक है।

मोबाइल व इंटरनेट से पड़ रहा नकारात्मक प्रभाव : प्रो. जितेंद्र

जागरण संवाददाता, महेंद्रगढ़ : हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा प्रासंगिक समाजशास्त्रीय विषय पर व्याख्यान शृंखला का आयोजन किया जा रहा है। प्रख्यात समाजशास्त्रियों और शोध विद्यार्थियों को विषय आधारित व्याख्यान के लिए विश्वविद्यालय ने आमंत्रित किया है। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से समाजशास्त्र विभाग के पूर्व प्रोफेसर बीके नागला ने जहां राजनीतिक सामाजीकरण और राजनीतिक संस्कृति पर व्याख्यान दिया, वहीं उसी विश्वविद्यालय के एक अन्य पूर्व प्रोफेसर डॉ. जितेन्द्र प्रसाद ने समकालीन समय में समाजशास्त्रीय सिद्धांत के महत्व और प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

प्रो. नागला ने राजनीतिक आधुनिकीकरण और भूमंडलीकरण पर दो व्याख्यान दिए। उन्होंने समाजशास्त्र के महत्व और राजनीतिक संस्कृति के बारे में बताते हुए राजनीतिक समाजीकरण के लिए राजनीतिक संस्कृति के प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत की महत्ता को जाहिर किया। हालांकि उन्होंने प्राथमिक श्रोत पर चिंता व्यक्त की कि आज के समय में परिवार, साथियों के समूह और स्कूल

केंद्रीय विश्वविद्यालय में आयोजित व्याख्यान में बोलते अतिथि ● जागरण

भयानक तनाव और दबाव से गुजर रहे हैं। दूसरी तरफ द्वितीयक स्रोत के रूप में निजी जीवन में मीडिया, सरकार और राजनीतिक पार्टियों ने प्राथमिक स्रोतों पर वर्चस्व कायम कर लिया है। उन्होंने सुझाव दिया कि समाजशास्त्रियों को इस परिवर्तन के लिए जिम्मेदार कारक का अध्ययन करना चाहिए।

दूसरे व्याख्यानमाला में प्रो. जितेन्द्र प्रसाद ने समाजशास्त्र में प्रकार्य और संरचनात्मक दृष्टिकोण के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने इस सवाल को समझने की कोशिश की कि समाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए समाज के मूल्यों और उसके सामान्य नियम क्या हैं? उन्होंने कहा कि निजी जीवन में जिस तरह से तकनीकी वर्चस्व जैसे इंटरनेट, मोबाइल, फेसबुक, ट्यूटर और समाजिक मीडिया के अन्य माध्यम से हस्तक्षेप हो रहा है, उसके कारण लोगों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। इसलिए समाजशास्त्र के विद्यार्थी होने के नाते समाज की विभिन्न प्रकृतियों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से व्यवस्थित रूप में अध्ययन करना चाहिए।

तीसरी व्याख्यान में जेण्डर के समाजशास्त्र पर जेएनयू की शोध विद्यार्थी अर्चना पांडेय ने बातचीत रखी।

लोगों के निजी जीवन में सोशल मीडिया का बढ़ रहा हस्तक्षेप

महेंद्रगढ़ (ब्यूरो)। हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा प्रासंगिक समाजशास्त्रीय विषय पर 15 से 27 मार्च 2018 के बीच व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया जा रहा है। व्याख्यान के लिए प्रख्यात समाजशास्त्रियों और शोध विद्यार्थियों को विषय आधारित व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया है।

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक से समाजशास्त्र विभाग के पूर्व प्रो. बीके नागला ने जहां राजनीतिक सामाजीकरण और राजनीतिक संस्कृति पर व्याख्यान दिया, वहीं उसी विश्वविद्यालय के एक अन्य भूतपूर्व प्रो. डॉ. जितेंद्र प्रसाद ने समकालीन समय में समाजशास्त्रीय सिद्धांत के महत्व और प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। प्रो. नागला ने राजनीतिक आधुनिकीकरण और भूमंडलीकरण पर दो व्याख्यान दिए।

उन्होंने कहा कि निजी जीवन में जिस तरह से तकनीकी वर्चस्व जैसे इंटरनेट, मोबाइल, फेसबुक, ट्यूटर और समाजिक मीडिया के अन्य माध्यम से हस्तक्षेप हो रहा है उसके कारण लोगों के नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। समाजशास्त्र विभाग एमए, एमफिल, और पीएचडी में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित कर रहा है। छात्रों को प्रवेश पाने के लिए केंद्रीय विश्वविद्यालय संयुक्त प्रवेश परीक्षा (सीयूसीईटी)-2018 होगी। छात्र समाज शास्त्र विभाग में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। आवेदन की अंतिम तिथि 26 मार्च 2018 तक है।